E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(8): 28-30
Received: 01-06-2023
Accepted: 05-07-2023

Vaishali Sharma Mishra
Research Scholar, Department of Music, Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal, Madhya Pradesh, India

Dr. Sudha Dixit
Research Guide and Professor, Department of Music, Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal, Madhya Pradesh, India

Corresponding Author:
Vaishali Sharma Mishra
Research Scholar, Department of Music, Sarojini Naidu Govt. Girls P.G. College, Bhopal, Madhya Pradesh, India

भक्तिकाल के कवि रामानंद का सांगितिक योगदान

Vaishali Sharma Mishra and Dr. Sudha Dixit

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i8a.1028

सारांश
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया है: द्रव्यगाथाकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल। संवत 1050 से 1365 तक वीरगाथा काल के अंतर्गत आता है, 1365 से 1700 तक भक्ति काल के अंतर्गत, 1700 से 1900 तक रीति काल के अंतर्गत और 1900 से आज तक का समय भक्ति काव्य के समकालीन काल के अंतर्गत आता है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का चरम काल माना जाता है। ये चार महान कवि- सूर, तुलसी, कबीर और जायसी- भक्तिकाल में रचे गये। हिंदी साहित्य के सूर्य और चंद्रमा का जन्म इसी युग में हुआ। हालाँकि इस पूरे समय में तीन धाराएँ चल रही थीं - प्रेम, ज्ञान और शुद्ध भक्ति का मार्ग - केवल भक्ति का आंतरिक स्रोत ही प्रवाहित हो रहा था, यही कारण है कि इस समय अवधि को भक्ति के काल के रूप में जाना जाता है। भक्ति भी प्रेम का रूप धारण कर लेती है। भक्ति काव्य की दो धाराएँ थीं एक सगुण धारा और दूसरी धारा। निर्गुण धारा के संस्थापकों द्वारा निराकार ईश्वर की पूजा को प्राथमिकता दी गई। ज्ञान और प्रेम के मार्ग निर्गुण धारा से निर्मित हुए। मुहम्मद जायसी प्रेममार्गी शाखा के गुरु थे, जबकि कबीर ज्ञानमार्गी शाखा के आदि कवि थे।

कूटशब्द: भक्ति काल, हिंदी साहित्य, स्वर्ण काल

1. प्रस्तावना
भक्तिकाल में अनेक महान संत हुए उन्ही में से स्वामी रामानंद को मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का महान संत माना जाता है। उन्होंने रामभक्ति धारा के समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाया व पहले ऐसे आचार्य हुए जिन्होने उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार किया स्वामी जी ने वैरागी संप्रदाय की स्थापना की जिसे रामानंद सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। तथा रामावत संप्रदाय भी कहा जाता है । संत रामानंद जी ने रामभक्ति पर बल दिया एवं उनके उपदेषो से जन साहित्य का विकास हुआ राम की सगुण भक्ति को समाज के सभी वर्गो तक पहुंचाने का कार्य संत रामानंद जी द्वारा किया गया । इन्होंने समाज में प्रचलित रूढ़ियो, अंध-विष्वासो एवं कुप्रथाओं का विरोध करते हुए समाज में समानता स्थापित करने कीदिषा मेंमहत्वपूर्णकार्यकिया।
उनके बारे मे कहावत प्रचलित है - ''द्दविड़ भक्ति उपजौ- लायो रामानंद'' यानि उत्तर भारत में भक्ति प्रचार करने का श्रेय स्वामी रामानंद को जाता है रामानंद जी ने सिद्धांत तथा रामभक्ति धारा को मध्यकाल में अनुपम तीव्रता प्रदान की उन्होंने अभूतपूर्व सामाजिक क्रांति का श्री गणेश करके समाज और सांस्कृतिक की रक्षा की उन्ही के चलते, उत्तर भारत में तीर्थ क्षेत्रो की रक्षा और वहां सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना संभव हो सकी स्वामी रामानंद के ही व्यक्तित्व का प्रभाव था कि हिन्दू-मुस्लिम, वैमनस्य, षैव वैष्णव विवाद वर्ण- विद्वेष, मत-मतांतर का झगड़ा एवं परस्पर

सामाजिक कटुता बहुत हद तक कम हो गई । शैव-वैष्णव

2. भक्तिकाल का परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसे पूर्वमध्यकाल भी कहा जाता है। इसकी समयावधि 1375 वि.स. से 1700 वि.स. तक मानी जाती है।यह हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठ काल है। इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण साहित्य काल भी कहा जाता है। इस काल के काव्य में भक्ति के परम रूप के दर्शन होते है। इस काल में संपूर्ण वातावरण भक्ति मय हो गया था। भक्ति काल का साहित्य भारतीय साहित्य के उत्थान का साहित्य है। भक्ति काल में दो धाराएं विकसित हुई निर्गुण काव्य धारा और सगुण काव्य धारा इन्ही धाराओं के अंतर्गत कई प्रसिद्ध कविं हुए जिनके कारण भक्तिकालीन साहित्य अतुलनीय है।

3. जीवन परिचय

3.1 कवि स्वामी रामानंद

स्वामी रामानंद जी का जन्म 1299 ई. में इलाहाबाद मे हुआ था । इनके पिता पुण्य सदन शर्मा एवं माता सुशीला देवी थे । इनकी मृत्यु 1411 ई. मानी जाती है। इनके माता पिता धार्मिक विचारो और संस्कारो के थे, इसलिए रामानंद के विचारो पर भी माता-पिता के संस्कारो का प्रभाव पड़ा। बचपन से ही वे पूजा -पाठ भक्ति संगीत में रूचि लेने लगे थे। रामानंदर कबीर, रैदास के गुरू थे। एवं इनके संप्रदाय को रामावत संप्रदाय (रामानंदी संप्रदाय) व श्री संप्रदाय भीकहा जाता था।

3.2 कवि रामानंद का संगीत मे योगदान

स्वामी रामानंद को मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का महान संत माना जाता है। स्वामी रामानंद ने राम भक्ति की धारा को समाज के निचले तबके तक पहुॅचाया। यह पहले ऐसे जिन्होने उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार करने का श्रेय प्राप्त किया। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए उन्होने पूरी भक्ति और अनुराग का दर्शन दिया एवं भक्ति का सभी लोगो को समान रूप से पालन करने का अधिकार दिया। रामानंद के धार्मिक आंदोलन मे भेदभाव नही था। उन्होने शिष्य में हिन्दुओं की विभिन्न जातियो के लोगो के साथ-साथ मुसलमान भी थे भारत मे रामानंदी साधुओ की संख्या सर्वाधिक थी।

4. भक्ति मार्ग का प्रचार

स्वामी रामानंद ने भक्ति मार्ग का प्रचार करने के लिए देशभर की यात्राएँ की अनेक धर्म स्थानो पर रामभक्ति का प्रचार किया। रामानंद जी ने भक्ति के प्रचार मे संस्कृत की जगह लोकभाषा को प्राथमिकता दी थी रामानंद जी ने कई पुस्तको की रचनाएं भी की उनकी प्रमुख रचना वैष्णव मताब्ज भाष्कर रही । इन्होने बिखरते और नीचे गिरते हुए समाज को मजबूत बनाने की भावना से भक्ति मार्ग में जातिवादी के भेद को व्यर्थ बताया और भगवान की शरण मे आने हेतु प्रेरित किया। रामानंद जी के बारह शिष्य दवादश महाभागवत के नाम से जाने जाते थे। रामानंद जी के शिष्य कबीरदास और रैदास आगे चलकर काफी प्रसिद्ध हुए और ख्याती अर्जित की । उनकी दो महिला शिष्या पद्मावती और सुरसरी थी।

5. रचनाएँ

इनके द्वारा रचित रचनाओ' की संख्या आठ बताई जाती है, जिनमे 6 किताबे हिंदी भाषा मे तथा 2 संस्कृत में लिखी गई थी।

रचना का नाम	भाषा
वैष्णव मजाब्ज भास्करः	संस्कृत
श्री रामार्चन पद्धतिः	संस्कृत
रामरक्षास्तोत्र	हिन्दी
सिद्धान्तपटल	हिन्दी
ज्ञानलीला	हिन्दी
ज्ञानतिलक	हिन्दी
योगचिंतामणि	हिन्दी
सतनामी पन्थ	हिन्दी

6. निष्कर्ष

निष्कर्षतः स्वामी रामानंद, भक्तिकाल के महान संत है रामानंद ने भक्ति मार्ग का प्रचार किया रामानंद अर्थात रामानंदाचार्य ने हिंदू धर्म को संगठित और व्यवस्थित करने के अथक प्रयास किए । उन्होने वैष्णव सम्प्रदाय को पुनर्गठित किया तथा वैष्णव साधुओ को उनका आत्मसम्मान दिलाया। रामानंद वैष्णव भक्तिधारा के महान संत है। सोचें जिनके शिष्य संत कबीर और रविदास जैसे संत रहे हो तो वे कितने महान रहे होंगे रामानंद ने अनेक ग्रंथ लिखे एवं उन्हे जनसाधारण तक पहुॅचाकर कर उनका उत्थान किया।

7. संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. उत्तरी भारत की संत परम्परा - परषुराम चतुर्वेदी।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास - नागेन्द्र।
4. भक्ति आंदोलन एवं काव्य - गोपेश्वर सिंह।

5. संतकाव्य की सामाजिक प्रांसगिकता - रविन्द्र कुमार सिंह ।
6. श्री वैष्णव मजाब्ज भास्करः रामानंदाचार्य विरचित - स्वामी त्रिभूवन दास।
7. मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत - डॉ. राकेश बाला सक्सेना।
8. हिन्दी साहित्य - लक्ष्मण सिंह ।
9. भारतीय संगीत का इतिहास - डॉ, शरच्चन्द्र श्री धर परांजये।
10. हमारे कवि एवं लेखक - डॉ, राजेष्वर प्रसाद चतुर्वेदी एवं राकेश ।
11. हिन्दी भाषा और साहित्य -किरण बाला।